

मध्यकालीन भारत: सल्तनत एवं मुगल प्रशासन की तुलनात्मक समीक्षा

DOI: <https://doi.org/10.63345/ujhmnds.v1.i3.201>

डॉ. ब्रजेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
डी.ए.वी. कॉलेज, बुलंदशहर
उत्तर प्रदेश, भारत



<http://www.ujhmnds.org/> || Vol. 1 No. 3 (2025): August Issue

Date of Submission: 03-07-2025

Date of Acceptance: 15-07-2025

Date of Publication: 02-08-2025

सार— मध्यकालीन भारत का इतिहास भारतीय प्रशासनिक, राजनीतिक तथा सामाजिक संरचना के विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। दिल्ली सल्तनत तथा मुगल साम्राज्य भारतीय उपमहाद्वीप के दो ऐसे प्रमुख शासन तंत्र रहे जिन्होंने प्रशासनिक संस्थाओं, राजस्व व्यवस्था, सैन्य संगठन, न्याय प्रणाली तथा प्रांतीय शासन की संरचना को गहराई से प्रभावित किया। यद्यपि दोनों शासन व्यवस्थाएँ इस्लामी राजनीतिक परंपराओं से प्रभावित थीं, तथापि भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप उनमें अनेक परिवर्तन एवं नवाचार भी दिखाई देते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य सल्तनत एवं मुगल प्रशासन की तुलनात्मक समीक्षा करना है, जिससे दोनों व्यवस्थाओं की समानताओं, भिन्नताओं तथा प्रशासनिक प्रभावशीलता का सम्यक् मूल्यांकन किया जा सके। यह अध्ययन ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है तथा द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से तैयार किया गया है। अध्ययन में केन्द्रीय शासन, प्रांतीय प्रशासन, राजस्व व्यवस्था, सैन्य संगठन, न्यायिक प्रणाली तथा स्थानीय प्रशासन जैसे प्रमुख आयामों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि सल्तनत प्रशासन ने भारतीय प्रशासनिक परंपरा की आधारशिला तैयार की, जबकि मुगल प्रशासन ने उसे अधिक संगठित, संस्थागत एवं व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया। विशेषतः अकबर के शासनकाल में प्रशासनिक व्यवस्था अधिक स्थायी, समन्वित तथा लोकहितकारी रूप में विकसित हुई। इस प्रकार मध्यकालीन भारत की प्रशासनिक विरासत आधुनिक भारतीय प्रशासन के विकास में भी महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है।

मुख्य शब्द— मध्यकालीन भारत, दिल्ली सल्तनत, मुगल प्रशासन, राजस्व व्यवस्था, मनसबदारी, इक्तादारी, प्रांतीय प्रशासन, न्याय व्यवस्था

भूमिका

भारतीय इतिहास का मध्यकाल लगभग तेरहवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी तक विस्तृत माना जाता है। इस काल में दिल्ली सल्तनत तथा मुगल साम्राज्य ने भारतीय राजनीतिक एवं प्रशासनिक इतिहास को नई दिशा प्रदान की। इन दोनों शासन व्यवस्थाओं ने न केवल विशाल साम्राज्यों का निर्माण किया, बल्कि ऐसी प्रशासनिक संस्थाओं का भी विकास किया जिनका प्रभाव आगे चलकर औपनिवेशिक प्रशासन तथा आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था पर भी दिखाई देता है।

दिल्ली सल्तनत की स्थापना 1206 ईस्वी में कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा की गई। इसके पश्चात गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैयद तथा लोदी वंशों ने क्रमशः शासन किया। सल्तनत काल की प्रमुख चुनौती विशाल भूभाग पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करना तथा विभिन्न जातीय एवं क्षेत्रीय शक्तियों को एक प्रशासनिक ढाँचे में संगठित करना था। इसी आवश्यकता के कारण इक्तादारी प्रणाली, केन्द्रीय मंत्रालयों, सैन्य संगठन तथा राजस्व प्रशासन का विकास हुआ।

1526 ईस्वी में प्रथम पानीपत के युद्ध के पश्चात बाबर द्वारा मुगल साम्राज्य की स्थापना की गई। हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ तथा औरंगज़ेब

के शासनकाल में यह साम्राज्य भारतीय उपमहाद्वीप के विशाल क्षेत्र तक विस्तृत हुआ। विशेषकर अकबर ने प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से ऐसी व्यवस्था विकसित की जिसमें धार्मिक सहिष्णुता, व्यवस्थित राजस्व प्रणाली, मनसबदारी व्यवस्था तथा सक्षम प्रांतीय प्रशासन को विशेष महत्व दिया गया। यही कारण है कि मुगल प्रशासन को मध्यकालीन भारत की सर्वाधिक संगठित प्रशासनिक प्रणाली माना जाता है।

- दोनों प्रशासनिक व्यवस्थाओं की समानताओं एवं भिन्नताओं का तुलनात्मक मूल्यांकन करना।
- प्रशासनिक दक्षता, राजस्व व्यवस्था तथा सैन्य संगठन का विश्लेषण करना।
- मध्यकालीन प्रशासन की आधुनिक भारतीय प्रशासन पर पड़ने वाली विरासत का अध्ययन करना।



सल्तनत एवं मुगल प्रशासन दोनों ही केंद्रीकृत शासन प्रणाली पर आधारित थे, परंतु उनकी प्रशासनिक नीतियों, अधिकारियों की नियुक्ति, सैन्य संगठन, कर व्यवस्था तथा स्थानीय प्रशासन में अनेक महत्वपूर्ण अंतर दिखाई देते हैं। जहाँ सल्तनत शासन अधिक सैन्य-केंद्रित था, वहीं मुगल प्रशासन ने प्रशासनिक संस्थाओं के संस्थानीकरण तथा उत्तरदायित्व पर अधिक बल दिया। दोनों व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन भारतीय प्रशासनिक इतिहास की निरंतरता तथा परिवर्तन को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

आज के संदर्भ में भी मध्यकालीन प्रशासन का अध्ययन प्रासंगिक है क्योंकि आधुनिक भारतीय प्रशासन की अनेक अवधारणाएँ—जैसे राजस्व संग्रह, प्रांतीय प्रशासन, अभिलेख व्यवस्था तथा नौकरशाही—ऐतिहासिक रूप से इन्हीं व्यवस्थाओं के विकासक्रम से जुड़ी हुई हैं। अतः यह अध्ययन केवल ऐतिहासिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि प्रशासनिक विज्ञान की दृष्टि से भी अत्यंत उपयोगी है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था का अध्ययन करना।
- मुगल प्रशासन की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक तथा ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है। अध्ययन में प्राथमिक स्रोतों के स्थान पर प्रमाणिक द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। इतिहासकारों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों, शोध लेखों तथा मान्यता प्राप्त शैक्षणिक ग्रंथों के आधार पर प्रशासनिक व्यवस्थाओं का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दोनों प्रकार की प्रविधियों का अनुसरण करता है। प्राप्त तथ्यों का तुलनात्मक परीक्षण करके निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

अध्ययन की रूपरेखा

अध्ययन का आयाम	विवरण
अध्ययन का प्रकार	गुणात्मक
अनुसंधान पद्धति	ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक
आँकड़ों का स्रोत	द्वितीयक स्रोत
अध्ययन का विषय	सल्तनत एवं मुगल प्रशासन
विश्लेषण का आधार	तुलनात्मक अध्ययन

साहित्य समीक्षा

मध्यकालीन भारत के प्रशासनिक इतिहास पर अनेक प्रतिष्ठित इतिहासकारों ने व्यापक शोध किया है। इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि सल्तनत एवं मुगल प्रशासन केवल राजनीतिक संस्थाएँ नहीं थे, बल्कि उन्होंने भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था तथा प्रशासनिक संरचना को दीर्घकालिक रूप से प्रभावित किया।

सतीश चन्द्र ने अपनी प्रसिद्ध कृति *Medieval India: From Sultanat to the Mughals* में दिल्ली सल्तनत एवं मुगल काल की प्रशासनिक, आर्थिक तथा सामाजिक संरचनाओं का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार सल्तनत प्रशासन ने केंद्रीकृत शासन की नींव रखी, जबकि मुगल प्रशासन ने उसी आधार को अधिक व्यवस्थित एवं संस्थागत स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने विशेष रूप से इक्तादारी व्यवस्था, मनसबदारी प्रणाली तथा राजस्व सुधारों को भारतीय प्रशासनिक इतिहास की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ माना है।

प्रशासनिक संरचना की तुलना

सल्तनत प्रशासन		मुगल प्रशासन
सुल्तान	सर्वोच्च सत्ता	सम्राट
इक्तादारी	प्रशासनिक आधार	मनसबदारी
इक्तादार / मुक्ती	प्रांतीय अधिकारी	सुबेदार
इक्ता	वैतन व्यवस्था	जागीर
सैनिक अधिकारियों पर आधारित	सैन्य संगठन	मनसबदारों पर आधारित
भूमि कर (झराज)	राजस्व प्रणाली	टोडरमल प्रणाली
सीमित	स्थानीय प्रशासन	अधिक विकसित
सीमित	अभिलेख व्यवस्था	विस्तृत एवं व्यवस्थित

दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था

दिल्ली सल्तनत (1206-1526 ई.) मध्यकालीन भारत की प्रथम दीर्घकालीन मुस्लिम शासन व्यवस्था थी। इस काल में शासन का मूल आधार सुल्तान की सर्वोच्च सत्ता थी। प्रशासन अत्यधिक केंद्रीकृत था तथा सभी प्रमुख निर्णय सुल्तान के अधिकार क्षेत्र में आते थे। यद्यपि शासन इस्लामी राजनीतिक सिद्धांतों से प्रभावित था, तथापि भारतीय परिस्थितियों एवं विशाल भौगोलिक क्षेत्र के कारण अनेक प्रशासनिक व्यवस्थाओं में स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तन किए गए।

सल्तनत काल की प्रशासनिक प्रणाली का प्रमुख उद्देश्य साम्राज्य की सुरक्षा, कर संग्रह, आंतरिक शांति तथा विद्रोहों का दमन था। शासन का स्वरूप सैनिक प्रधान था और अधिकारियों की नियुक्ति योग्यता, निष्ठा तथा सैन्य क्षमता के आधार पर की जाती थी। विशेष रूप से इल्तुतमिश, अलाउद्दीन खिलजी तथा मुहम्मद बिन तुगलक ने प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से शासन व्यवस्था को अधिक संगठित बनाने का प्रयास किया।

केन्द्रीय प्रशासन

सल्तनत प्रशासन का केंद्र सुल्तान था, जो शासन, सेना, न्याय तथा वित्त का सर्वोच्च अधिकारी माना जाता था। उसके अधीन विभिन्न विभाग कार्य करते थे।

विभाग	प्रमुख अधिकारी	प्रमुख कार्य
वज़ारत	वज़ीर	वित्त एवं समस्त प्रशासन का संचालन
दीवान-ए-अर्ज	आरिज़-ए-मुमालिक	सेना का संगठन एवं सैनिकों की नियुक्ति
दीवान-ए-इंशा	दबीर	शाही पत्राचार एवं अभिलेख
दीवान-ए-रसालत	सद्र	धार्मिक एवं विदेशी मामलों का संचालन
काज़ी-उल-कुज़ात	मुख्य काज़ी	न्यायिक व्यवस्था

वज़ीर को सुल्तान के बाद सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी माना जाता था। वह राज्य की आय-व्यय, कर संग्रह तथा प्रशासनिक नियंत्रण का उत्तरदायी होता था।

प्रांतीय प्रशासन

विशाल साम्राज्य के प्रभावी संचालन के लिए राज्य को विभिन्न प्रांतों में विभाजित किया गया था। प्रत्येक प्रांत में नियुक्त अधिकारी को प्रायः इक्तादार अथवा मुक्ती कहा जाता था।

इरफ़ान हबीब ने *The Agrarian System of Mughal India* में मुगल काल की कृषि, भूमि स्वामित्व तथा राजस्व व्यवस्था का गहन अध्ययन किया है। उनके अनुसार अकबर द्वारा विकसित भूमि मापन तथा कर निर्धारण प्रणाली ने प्रशासनिक स्थिरता एवं राजस्व संग्रह की दक्षता को बढ़ाया। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि मुगल प्रशासन का आर्थिक आधार अत्यंत संगठित था तथा उसकी सफलता का प्रमुख कारण व्यवस्थित राजस्व प्रबंधन था।

हरबंस मुखिया ने मध्यकालीन भारतीय समाज एवं राज्य व्यवस्था पर अपने अध्ययनों में यह प्रतिपादित किया कि सल्तनत एवं मुगल प्रशासन को केवल धार्मिक दृष्टिकोण से नहीं बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक संदर्भों में भी समझना आवश्यक है। उनके अनुसार प्रशासनिक संस्थाएँ भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप निरंतर विकसित होती रहीं।

जदुनाथ सरकार ने विशेष रूप से औरंगज़ेब कालीन प्रशासन, सैन्य व्यवस्था तथा शासन प्रणाली का विस्तृत विश्लेषण किया है। उन्होंने मुगल प्रशासन की शक्तियों के साथ-साथ उसकी कमजोरियों, विशेषकर उत्तरकालीन प्रशासनिक विघटन, पर भी प्रकाश डाला।

आर. सी. मजूमदार द्वारा संपादित *An Advanced History of India* भारतीय इतिहास के व्यापक अध्ययन का महत्वपूर्ण स्रोत है। इस ग्रंथ में सल्तनत एवं मुगल प्रशासन की संरचना, विकास तथा ऐतिहासिक प्रभाव का संतुलित एवं तथ्यपरक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश शोधों में सल्तनत अथवा मुगल प्रशासन का पृथक-पृथक विश्लेषण किया गया है, जबकि दोनों व्यवस्थाओं की प्रशासनिक संरचनाओं का व्यापक तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित है। यही इस शोध का प्रमुख आधार एवं शोध-अंतर है, जिसके माध्यम से दोनों प्रशासनिक प्रणालियों के संगठन, कार्यप्रणाली तथा प्रभावशीलता का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाएगा।

प्रांतीय अधिकारी की प्रमुख जिम्मेदारियाँ थीं—

- कर संग्रह
- कानून एवं व्यवस्था बनाए रखना
- सैनिक व्यवस्था
- सुल्तान के आदेशों का पालन
- विद्रोहों का दमन

यद्यपि इक्तादारों को पर्याप्त अधिकार प्राप्त थे, फिर भी उन्हें पूर्ण स्वायत्तता प्राप्त नहीं थी। उनकी नियुक्ति एवं स्थानांतरण का अधिकार सुल्तान के पास सुरक्षित रहता था।

इक्तादारी व्यवस्था

सल्तनत प्रशासन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता **इक्तादारी प्रणाली** थी।

इक्ता ऐसी प्रशासनिक एवं राजस्व इकाई थी जिसे किसी अधिकारी को वेतन के स्थान पर प्रदान किया जाता था। इक्तादार उस क्षेत्र से कर वसूल करता था तथा उसी आय से सैनिकों का वेतन, प्रशासनिक व्यय तथा शेष राशि केंद्र को भेजता था।

इक्तादारी प्रणाली की प्रमुख विशेषताएँ—

- भूमि का स्वामित्व राज्य के पास रहता था।
- इक्तादार केवल राजस्व वसूली का अधिकारी था।
- इक्ता वंशानुगत नहीं थी।
- सुल्तान आवश्यकता अनुसार इक्ता बदल सकता था।
- इक्तादार की नियमित जाँच की जाती थी।

इल्तुतमिश ने इस व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया जबकि अलाउद्दीन खिलजी ने इसके दुरुपयोग को रोकने के लिए कठोर नियंत्रण स्थापित किया।

राजस्व प्रशासन

सल्तनत शासन की आर्थिक शक्ति का आधार कृषि कर था।

मुख्य करों में सम्मिलित थे—

- ख़राज (भूमि कर)
- उश्र
- ज़कात
- जज़िया
- ख़ुम्स

अलाउद्दीन खिलजी ने कृषि उत्पादन का लगभग आधा भाग कर के रूप में निर्धारित किया तथा भ्रष्टाचार रोकने हेतु प्रत्यक्ष कर संग्रह प्रणाली लागू की। भूमि मापन, अधिकारियों की निगरानी तथा अभिलेख व्यवस्था को भी सुदृढ़ किया गया।

मुख्य व्यवस्थाओं की तुलना							
राजस्व व्यवस्था		सैन्य संगठन		अधिकारियों की व्यवस्था		न्याय व्यवस्था	
							
सल्तनत	मुगल	सल्तनत	मुगल	सल्तनत	मुगल	सल्तनत	मुगल
भूमि कर अनुमानित आधार	भूमि मापन औसत आधारित कर निर्धारण	अश्व, पैदल हाथी सेना	मनसबदारी संगठित सेना निरीक्षण प्रणाली	योग्यता निष्ठा सैनिक क्षमता	मनसब पद व जिम्मेदारी नियत	शरीयत आधारित न्याय	शरीयत + स्थानीय परंपराओं को स्थान

सैन्य प्रशासन

सल्तनत शासन मूलतः सैनिक शक्ति पर आधारित था।

सेना के प्रमुख अंग थे—

- अश्व सेना
- पैदल सेना
- हाथी सेना
- सीमांत सुरक्षा बल

अलाउद्दीन खिलजी ने सेना सुधारों के अंतर्गत—

- घोड़ों पर दाग लगाने की व्यवस्था
- सैनिकों का पंजीकरण
- नियमित वेतन
- निरीक्षण प्रणाली

जैसे महत्वपूर्ण सुधार लागू किए।

न्यायिक व्यवस्था

सल्तनत काल की न्याय व्यवस्था इस्लामी विधि से प्रभावित थी।

न्यायिक संरचना में—

- मुख्य क्राज़ी
- प्रांतीय क्राज़ी
- स्थानीय न्यायाधिकारी

कार्यरत रहते थे।

धार्मिक मामलों में शरीयत का पालन किया जाता था जबकि स्थानीय परंपराओं को भी अनेक मामलों में स्वीकार किया जाता था।

मुगल प्रशासन की व्यवस्था

1526 ईस्वी में स्थापित मुगल साम्राज्य ने मध्यकालीन भारत की प्रशासनिक प्रणाली को अत्यधिक संगठित एवं संस्थागत स्वरूप प्रदान किया। विशेष रूप से अकबर के शासनकाल में प्रशासनिक सुधारों ने भारतीय इतिहास में नई प्रशासनिक परंपरा स्थापित की।

मुगल प्रशासन का उद्देश्य केवल कर संग्रह नहीं बल्कि स्थायी शासन, आर्थिक विकास, प्रशासनिक उत्तरदायित्व तथा राजनीतिक स्थिरता स्थापित करना था।



केन्द्रीय प्रशासन

मुगल सम्राट सर्वोच्च शासक था, परन्तु प्रशासन विभिन्न विभागों में विभाजित था।

विभाग	अधिकारी	प्रमुख उत्तरदायित्व
वकील	प्रधानमंत्री	शासन का समन्वय
दीवान	वित्त मंत्री	राजस्व एवं वित्त
मीर बख्शी	सैन्य प्रमुख	मनसबदारों एवं सेना का नियंत्रण

सदर-उस-सुदूर	धार्मिक विभाग	दान एवं धार्मिक संस्थाएँ
क्राज़ी-उल-कुज़ात	मुख्य न्यायाधीश	न्यायिक व्यवस्था

अकबर ने विभागीय उत्तरदायित्व स्पष्ट कर प्रशासन को अधिक कुशल बनाया।

मनसबदारी व्यवस्था

मुगल प्रशासन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता मनसबदारी प्रणाली थी।

प्रत्येक अधिकारी को एक निश्चित मनसब (पद) प्रदान किया जाता था।

मनसब के दो भाग होते थे—

- ज़ात
- सवार

ज़ात अधिकारी की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा को दर्शाता था जबकि सवार उसके अधीन सैनिकों की संख्या को।

मनसबदारों का नियमित स्थानांतरण होता था जिससे किसी भी अधिकारी की क्षेत्रीय शक्ति अत्यधिक न बढ़ सके।

जागीर व्यवस्था

मनसबदारों को वेतन के स्थान पर जागीर प्रदान की जाती थी।

जागीर की विशेषताएँ—

- भूमि पर स्वामित्व राज्य का रहता था।
- केवल राजस्व वसूली का अधिकार दिया जाता था।
- जागीर वंशानुगत नहीं थी।
- समय-समय पर परिवर्तन किया जाता था।
- केंद्रीय नियंत्रण बना रहता था।

राजस्व प्रशासन

अकबर के वित्त मंत्री राजा टोडरमल द्वारा विकसित राजस्व व्यवस्था मुगल प्रशासन की सबसे बड़ी उपलब्धियों में मानी जाती है।

मुख्य विशेषताएँ—

- भूमि मापन
- फसल वर्गीकरण
- औसत उत्पादन का निर्धारण
- दशवर्षीय औसत
- निश्चित कर निर्धारण

इस व्यवस्था ने कर संग्रह को अधिक पारदर्शी तथा स्थायी बनाया।

प्रांतीय प्रशासन

मुगल साम्राज्य को विभिन्न सूबों में विभाजित किया गया था।

प्रत्येक सूबे में प्रमुख अधिकारी थे—

अधिकारी	कार्य
सूबेदार	प्रशासन एवं सुरक्षा
दीवान	राजस्व
बख्शी	सैन्य व्यवस्था
काज़ी	न्याय
सदर	धार्मिक कार्य

सूबों के अंतर्गत सरकार, परगना तथा ग्राम प्रशासन की स्पष्ट व्यवस्था विकसित की गई।

स्थानीय प्रशासन

ग्राम स्तर पर—

- मुकद्दम
- पटवारी
- चौधरी
- पंचायत

महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

नगरों में—

- कोतवाल
- बाजार नियंत्रक
- नगर अधिकारी

कानून व्यवस्था एवं व्यापार की निगरानी करते थे।

न्याय व्यवस्था

मुगल न्याय प्रणाली अपेक्षाकृत अधिक व्यवस्थित थी।

सम्राट सर्वोच्च न्यायाधीश माना जाता था।

न्यायिक व्यवस्था में—

- मुख्य काज़ी
- प्रांतीय काज़ी
- स्थानीय न्यायालय

सक्रिय थे।

अकबर ने अनेक मामलों में धार्मिक सहिष्णुता एवं स्थानीय परंपराओं को भी न्यायिक प्रक्रिया में स्थान दिया।

सल्तनत एवं मुगल प्रशासन का तुलनात्मक विश्लेषण

सारणी : प्रमुख प्रशासनिक तुलना

आधार	दिल्ली सल्तनत	मुगल प्रशासन
शासन स्वरूप	सैनिक प्रधान	संस्थागत एवं केंद्रीकृत
सर्वोच्च अधिकारी	सुल्तान	सम्राट
प्रशासनिक आधार	इक्तादारी	मनसबदारी
राजस्व व्यवस्था	इक्ता आधारित	टोडरमल प्रणाली
प्रांतीय प्रशासन	इक्तादार	सूबेदार
वेतन व्यवस्था	इक्ता	जागीर
सेना	सैन्य अधिकारियों पर आधारित	मनसबदारी संगठन
स्थानीय प्रशासन	सीमित	अधिक विकसित
अभिलेख व्यवस्था	सीमित	अत्यंत व्यवस्थित
प्रशासनिक स्थिरता	अपेक्षाकृत कम	अधिक स्थायी

सारणी : प्रशासनिक विशेषताओं की तुलना

प्रशासनिक पक्ष	सल्तनत	मुगल
केंद्रीकरण	उच्च	उच्च

विभागीय संगठन	विकसित	अत्यधिक विकसित
राजस्व दक्षता	मध्यम	उच्च
भूमि मापन	सीमित	वैज्ञानिक
सैनिक नियंत्रण	अच्छा	अत्यधिक संगठित
अधिकारी नियंत्रण	नियमित	अधिक प्रभावी
धार्मिक नीति	शासक पर निर्भर	अकबर काल में अधिक उदार
स्थानीय सहभागिता	सीमित	अपेक्षाकृत अधिक
प्रशासनिक अभिलेख	कम	विस्तृत
दीर्घकालिक प्रभाव	आधारभूत	अत्यधिक व्यापक

प्रमुख समानताएँ

- दोनों व्यवस्थाएँ केंद्रीकृत शासन पर आधारित थीं।
- दोनों में सर्वोच्च सत्ता शासक के पास थी।
- दोनों ने भूमि कर को आय का प्रमुख स्रोत बनाया।
- दोनों में प्रांतीय प्रशासन विकसित था।
- दोनों में सेना का विशेष महत्व था।
- दोनों में नियुक्त अधिकारी केंद्र के प्रति उत्तरदायी थे।
- दोनों ने विस्तृत प्रशासनिक विभाग विकसित किए।
- दोनों व्यवस्थाओं में धार्मिक एवं न्यायिक विभाग पृथक थे।

प्रमुख भिन्नताएँ

- सल्तनत में इक्तादारी जबकि मुगलों में मनसबदारी व्यवस्था विकसित हुई।
- मुगल प्रशासन अधिक संस्थागत एवं लिखित अभिलेखों पर आधारित था।
- टोडरमल की राजस्व प्रणाली सल्तनत की तुलना में अधिक वैज्ञानिक थी।
- मुगल प्रशासन में स्थानीय प्रशासन अधिक विकसित था।
- प्रशासनिक उत्तरदायित्व मुगल काल में अधिक स्पष्ट था।
- विभागीय समन्वय मुगल प्रशासन में अधिक प्रभावी था।
- मुगल शासन की स्थिरता सल्तनत की अपेक्षा अधिक रही।

चर्चा

दिल्ली सल्तनत एवं मुगल प्रशासन का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि मध्यकालीन भारत में प्रशासनिक संस्थाओं का विकास एक क्रमिक एवं निरंतर प्रक्रिया थी। सल्तनत शासन ने जहाँ भारत में एक संगठित केंद्रीय प्रशासन की आधारशिला रखी, वहीं मुगल शासन ने उसे अधिक विकसित, संस्थागत तथा उत्तरदायी स्वरूप प्रदान किया। दोनों प्रशासनिक

व्यवस्थाओं में अनेक समानताएँ थीं, जैसे केंद्रीकृत शासन, भूमि-आधारित राजस्व प्रणाली, प्रांतीय प्रशासन तथा सैन्य संगठन; तथापि उनकी कार्यप्रणाली, प्रशासनिक दर्शन एवं संगठनात्मक दक्षता में उल्लेखनीय अंतर भी दिखाई देता है।

सल्तनत काल का प्रशासन मुख्यतः साम्राज्य की सुरक्षा, राजनीतिक नियंत्रण तथा कर संग्रह पर केंद्रित था। उस समय शासन को निरंतर आंतरिक विद्रोहों, सीमावर्ती आक्रमणों तथा राजनीतिक अस्थिरता का सामना करना पड़ता था। परिणामस्वरूप प्रशासन का स्वरूप सैनिक प्रधान रहा। इक्तादारी व्यवस्था ने तत्कालीन परिस्थितियों में शासन संचालन को सरल बनाया, किंतु दीर्घकाल में अनेक इक्तादार स्थानीय स्तर पर अत्यधिक शक्तिशाली हो गए, जिससे केंद्रीय नियंत्रण को चुनौती मिलने लगी। इस समस्या को नियंत्रित करने के लिए विभिन्न सुलतानों ने समय-समय पर इक्ताओं के स्थानांतरण, निरीक्षण तथा राजस्व लेखा-परीक्षण की व्यवस्था लागू की।

इसके विपरीत मुगल प्रशासन अधिक सुव्यवस्थित, संस्थागत तथा अभिलेख-आधारित था। अकबर के शासनकाल में विकसित प्रशासनिक सुधारों ने शासन को दीर्घकालीन स्थिरता प्रदान की। मनसबदारी व्यवस्था के माध्यम से अधिकारियों की नियुक्ति, पदोन्नति तथा उत्तरदायित्व को स्पष्ट रूप से निर्धारित किया गया। इसी प्रकार राजा टोडरमल द्वारा विकसित भूमि मापन एवं राजस्व निर्धारण प्रणाली ने राज्य की आय को स्थिर बनाया तथा किसानों एवं प्रशासन के मध्य अपेक्षाकृत संतुलित संबंध स्थापित किए।

मुगल प्रशासन की एक महत्वपूर्ण विशेषता विभागीय समन्वय थी। प्रत्येक विभाग के अधिकार एवं उत्तरदायित्व स्पष्ट थे तथा अधिकारियों के बीच शक्ति संतुलन बनाए रखने का प्रयास किया गया। दीवान, मीर बख्शी, सूबेदार, काज़ी तथा अन्य अधिकारियों के कार्यों का पृथक्करण प्रशासनिक दक्षता को बढ़ाता था। इसके विपरीत सल्तनत प्रशासन में अनेक बार अधिकारों का केंद्रीकरण अधिक होने के कारण प्रशासनिक कार्य शासक की व्यक्तिगत क्षमता पर निर्भर हो जाते थे।

राजस्व व्यवस्था की दृष्टि से भी दोनों व्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण अंतर दिखाई देता है। सल्तनत काल में कर निर्धारण अपेक्षाकृत कठोर था तथा विभिन्न क्षेत्रों में इसकी एकरूपता सीमित थी। मुगल काल में विशेषकर अकबर के समय भूमि की माप, फसल वर्गीकरण, औसत उत्पादन तथा दशवर्षीय औसत के आधार पर कर निर्धारण ने प्रशासन को अधिक वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया। इससे राजस्व संग्रह अधिक नियमित हुआ तथा प्रशासनिक पारदर्शिता में वृद्धि हुई।

सैन्य संगठन के क्षेत्र में दोनों व्यवस्थाओं ने प्रभावशाली व्यवस्थाएँ विकसित कीं। अलाउद्दीन खिलजी द्वारा घोड़ों पर दाग लगाने तथा सैनिकों के पंजीकरण की व्यवस्था बाद के प्रशासनिक सुधारों की आधारभूमि बनी।

मुगल काल में मनसबदारी व्यवस्था ने सैनिक संगठन को और अधिक सुव्यवस्थित किया। प्रत्येक मनसबदार की सैन्य क्षमता का नियमित परीक्षण किया जाता था तथा उसकी सैन्य जिम्मेदारी स्पष्ट रूप से निर्धारित होती थी।

न्याय व्यवस्था में भी विकास का क्रम स्पष्ट दिखाई देता है। सल्तनत काल में न्याय मुख्यतः इस्लामी विधि पर आधारित था, जबकि मुगल काल विशेषकर अकबर के शासन में स्थानीय परंपराओं, प्रथाओं तथा व्यवहारिक आवश्यकताओं को भी महत्व दिया गया। इससे प्रशासन में अपेक्षाकृत अधिक समावेशिता विकसित हुई।

इस प्रकार तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सल्तनत प्रशासन भारतीय प्रशासनिक विकास का प्रारंभिक संगठित चरण था, जबकि मुगल प्रशासन उसी परंपरा का अधिक परिपक्व एवं व्यवस्थित रूप था।

प्रमुख निष्कर्ष

अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं—

- दिल्ली सल्तनत ने भारत में केंद्रीकृत प्रशासन की सुदृढ़ नींव स्थापित की।
- मुगल प्रशासन ने प्रशासनिक संस्थाओं को अधिक संगठित एवं उत्तरदायी बनाया।
- इक्तादारी व्यवस्था ने प्रारंभिक प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित किया, जबकि मनसबदारी व्यवस्था अधिक प्रभावी एवं व्यवस्थित सिद्ध हुई।
- राजा टोडरमल की राजस्व प्रणाली मध्यकालीन भारत की सर्वाधिक वैज्ञानिक राजस्व व्यवस्था थी।
- मुगल प्रशासन में विभागीय उत्तरदायित्व, अभिलेख व्यवस्था तथा वित्तीय नियंत्रण अधिक विकसित थे।
- सल्तनत प्रशासन सैनिक आवश्यकताओं पर आधारित था, जबकि मुगल प्रशासन प्रशासनिक स्थायित्व एवं आर्थिक विकास दोनों पर समान रूप से केंद्रित था।
- दोनों व्यवस्थाओं ने भारतीय प्रशासनिक इतिहास के विकास में स्थायी योगदान दिया।
- आधुनिक भारतीय प्रशासन की अनेक अवधारणाओं—जैसे राजस्व अभिलेख, प्रांतीय प्रशासन, विभागीय उत्तरदायित्व तथा नौकरशाही—की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि मध्यकालीन प्रशासन में दिखाई देती है।

अध्ययन की सीमाएँ

- अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

- प्रशासनिक व्यवस्थाओं का विश्लेषण ऐतिहासिक अभिलेखों एवं प्रकाशित साहित्य तक सीमित है।
- क्षेत्रीय राज्यों की प्रशासनिक व्यवस्थाओं को इस अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया है।
- सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयामों का केवल प्रशासनिक संदर्भ में ही उल्लेख किया गया है।

भावी अनुसंधान की संभावनाएँ

भविष्य में निम्नलिखित विषयों पर विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है—

- सल्तनत एवं मुगल प्रशासन का आर्थिक इतिहास के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन।
- मध्यकालीन प्रशासन एवं आधुनिक भारतीय प्रशासनिक सेवाओं के विकास का तुलनात्मक विश्लेषण।
- प्रांतीय एवं स्थानीय प्रशासन की क्षेत्रीय विविधताओं का अध्ययन।
- मुगल प्रशासन एवं समकालीन यूरोपीय प्रशासनिक व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन।
- मध्यकालीन प्रशासन में महिलाओं, व्यापारियों एवं स्थानीय समुदायों की प्रशासनिक भूमिका का विश्लेषण।

समापन

मध्यकालीन भारत का प्रशासनिक इतिहास भारतीय राज्य व्यवस्था के विकास का महत्वपूर्ण अध्याय है। दिल्ली सल्तनत ने राजनीतिक एकीकरण एवं प्रशासनिक केंद्रीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ की, जबकि मुगल साम्राज्य ने उसे संस्थागत, व्यवस्थित तथा दीर्घकालिक स्वरूप प्रदान किया। सल्तनत काल की इक्तादारी व्यवस्था और मुगल काल की मनसबदारी व्यवस्था दोनों अपने-अपने समय की प्रशासनिक आवश्यकताओं की उपज थीं। किंतु प्रशासनिक दक्षता, राजस्व प्रबंधन, अभिलेख व्यवस्था तथा विभागीय समन्वय की दृष्टि से मुगल प्रशासन अपेक्षाकृत अधिक विकसित सिद्ध हुआ।

दोनों व्यवस्थाओं की उपलब्धियाँ एवं सीमाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि प्रशासनिक संस्थाएँ समय, समाज एवं राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार निरंतर विकसित होती रहती हैं। मध्यकालीन भारत की प्रशासनिक विरासत ने न केवल औपनिवेशिक प्रशासन को प्रभावित किया बल्कि आधुनिक भारतीय प्रशासनिक संरचना के विकास में भी अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अतः सल्तनत एवं मुगल प्रशासन का तुलनात्मक अध्ययन भारतीय प्रशासनिक इतिहास, राज्य विज्ञान तथा इतिहास विषय के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी एवं प्रासंगिक है।

संदर्भ सूची

1. Chandra, Satish. (2007). *Medieval India: From Sultanat to the Mughals, Part I (1206–1526)*. New Delhi: Har-Anand Publications. ISBN: **9788124110669**
2. Chandra, Satish. (2007). *Medieval India: From Sultanat to the Mughals, Part II (1526–1748)*. New Delhi: Har-Anand Publications. ISBN: **9788124110676**
3. Habib, Irfan. (1999). *The Agrarian System of Mughal India (1556–1707)*. Second Edition. New Delhi: Oxford University Press. ISBN: **9780195623291**
4. Habib, Irfan. (2011). *Medieval India: The Study of a Civilization*. New Delhi: National Book Trust, India. ISBN: **9788123759425**
5. Majumdar, R. C., Raychaudhuri, H. C., & Datta, Kalikinkar. (2017 reprint). *An Advanced History of India*. Macmillan Publishers India Ltd.
6. Sarkar, Jadunath. (1928–1950). *History of Aurangzib (Vols. I–V)*. Calcutta: M. C. Sarkar & Sons.
7. Moreland, W. H. (1920). *India at the Death of Akbar: An Economic Study*. London: Macmillan.
8. Moreland, W. H. (1923). *From Akbar to Aurangzeb: A Study in Indian Economic History*. London: Macmillan.
9. Lane-Poole, Stanley. (1903). *Medieval India under Mohammedan Rule (712–1764)*. London: T. Fisher Unwin.
10. Eaton, Richard M. (2005). *A Social History of the Deccan, 1300–1761: Eight Indian Lives*. Cambridge University Press. ISBN: **9780521254847**

UNIVERSAL JOURNAL
OF HUMANITIES
AND
MULTI-DISCIPLINARY STUDIES